Administrative Ethics
प्रशासकीय नीतिशास्त्र

Part - A
2 MARKS

2021

1. **प्रशासनिक कर्त्तव्य के निर्वहन में 'स्थित प्रज्ञ' की संकल्पना की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।**
Explain the role of the concept of 'sthit pragya' in the discharge of administrative responsibilities.

उ. हर परिस्थिति में स्थिर रहना यानि स्थित प्रज्ञ की अवस्था से प्रशासक की भावनाएं नियंत्रित रहती है, प्रशासक तथ्यों व साक्ष्यों को अधिक महत्त्व देता है, जिससे निर्णय लेने की क्षमता में दक्षता आती है तथा कर्त्तव्य निर्वहन उत्कृष्ट हो जाता है।

2. **बुद्ध की कौनसी शिक्षा आज सर्वाधिक प्रासंगिक है और क्यों?**
What teachings of Buddha are most relevant today and why?

उ. आत्म दीपो भव: की अवधारणा व्यक्ति को अपना प्रकाश स्वयं बनने की प्रेरणा देती है, इससे व्यक्ति आत्मविश्वासी, पहलगामी, बदलावों का पक्षधर बनता है, जिससे समाज में नवाचार, शिक्षा का प्रसार, लोकतंत्र में मजबूती के साथ-साथ बिना भय, रोक-टोक के सृजनात्मकता का विकास होता है।

3. **नैतिक द्वंद्व से आप क्या समझते है?**
What do you understand by ethical dilemma?

उ. लोक सेवक को समय एवं परिस्थितियों के अनुरूप विभिन्न चुनौतियों व समस्याओं का सामना करना पड़ता है। दो उचित या सही के बीच एक उचित या सही का चुनाव करना ही नैतिक द्वंद्व होता है।

- जैसे लोक सेवक को विकास कार्य व पर्यावरण के मध्य किसी एक का चुनाव करना नैतिक द्वंद्व है जबकि दोनों कार्य आवश्यक है।

4. **प्रशासनिक जीवन में 'ऋण' के नैतिक आदर्श की प्रासंगिकता को स्पष्ट कीजिए।**
Explain the relevance of ethical idea of 'Rin' in the administrative life.

उ. ऋण व्यक्ति के दायित्व का निर्धारण करता है ठीक इसी प्रकार प्रशासक के भी समाज के प्रति दायित्व होते हैं क्योंकि उसने जो भी प्राप्त किया है, समाज से ही प्राप्त किया है। इसीलिए प्रशासक को सामाजिक कल्याण व न्याय के लिए कार्य करना चाहिए।

5. **भगवद् गीता का 'अनासक्ति सिद्धांत' किस रूप में एक प्रशासक के जीवन में सार्थक है?**
In what ways is 'detachment theory' of Bhagvad Gita significant in the life of an administrator?

उ. सफलता एवं असफलता की चिंता किए बिना अपने कार्यों का संपादन करना चाहिए क्योंकि अधिक चिंतन से आसक्ति उत्पन्न होती है एवं आसक्ति से कामनाएं एवं क्रोध उत्पन्न होता है जबकि अनासक्ति से स्थितिप्रज्ञता का विकास होता है, जिससे प्रशासक में ईमानदारी, कर्त्तव्यनिष्ठता जैसे गुण विकसित होते है।

2018

1. **किस प्रकार 'ऋत' की धारणा प्रशासनिक उत्कृष्टता को संवर्धित करती है?**
How does the concept of 'Rit' enhance administrative excellence?

उ. 'ऋत' संपूर्ण विश्व में व्याप्त एक व्यवस्था है, जिसके कारण विश्व की सभी प्रकार की घटनाएँ नियमबद्ध तरीके से घटित होती है। यह भौतिक नियमों के साथ आचरण संबंधी नियमों को भी समाहित करता है। एक प्रशासक प्रशासनिक नियमों, संवैधानिक मूल्यों, कानूनों, नियमों के अनुरूप कार्य करते हुए लोक-कल्याण की ओर अग्रसर होता है, जो प्रशासनिक उत्कृष्टता को संवर्धित करता है।

2. **प्रशासन का उद्देश्य लोक-कल्याण है। गीता का कौन सा सिद्धांत इस आशय की पुष्टि करता है?**
The Aim of administration is public welfare. Which principle of Geeta upholds this intention?

उ. भगवद्गीता के लोक संग्रह के सिद्धान्त का उद्देश्य लोक कल्याण है, जो लोक विचार की प्रधानता पर बल देता है। एक प्रशासक को जन कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए, ताकि सुशासन स्थापित हो सके।

3. **अहिंसा गाँधी की नैतिकता का केन्द्रीय मूल्य क्यों है?**
Why is 'non-violence' or 'ahimsa' a core value of Gandhian Ethics?

उ. गाँधी की अहिंसा केवल शारीरिक हिंसा का प्रतिलोम नहीं वरन् यह मनसा, वाचा, कर्मणा से किसी को भी दु:ख न पहुँचाने की संकल्पना है। गाँधी के अनुसार जीवन के लक्ष्य अर्थात् सत्य को पाने का एक मात्र साधन अहिंसा ही है, अत: पूर्ण साधन होने से अहिंसा गाँधी की नैतिकता का केन्द्रीय मूल्य है।

4. **प्लेटो न्याय को कैसे परिभाषित करते हैं?**
Define justice according to Plato.

उ. प्लेटो दूसरों के अधिकारों की रक्षा करने को न्याय कहते हैं। उनके अनुसार न्याय सर्वोच्च सद्गुण है, जो विवेक, साहस तथा संयम का सही अनुपात में सामंजस्य होने पर उत्पन्न होता है। उदाहरण के तौर पर एक प्रशासक इन सभी गुणों के मध्य सामंजस्य रखता है तो आपदा प्रबन्धन, दंगें इत्यादि में बेहतर भूमिका निभा सकता है।

5. **संवेगात्मक बुद्धिमता से आप क्या समझते हैं?**
What do you understand by emotional intelligence?

उ. संवेगात्मक बुद्धिमता वह योग्यता है, जिसमें व्यक्ति स्वयं की तथा अन्य व्यक्तियों अथवा समूह की भावनाओं को समझता है, उनमें अंतर करता है तथा इन भावनाओं का विनियमन व संतुलन स्थापित करके अपने चिंतन व क्रियाओं को निर्देशित करता है।

- संवेगात्मक बुद्धिमता से प्रशासक में निर्णय क्षमता, तनाव प्रबंधन, संचार कौशल अधीनस्थ में प्रेरणा विकास जैसे गुणों का विकास होता है।

2023

1. What are cardinal virtues according to Plato?
प्लेटो के अनुसार मुख्य सद्गुण कौनसे हैं?

उत्तर- प्लेटो का सदगुण से संबंधित सिद्धांत 'मुख्य सदगुण' (Cardinal virtue) के नाम से जाना जाता है, जिसमें प्लेटो समाज के चार प्रमुख सदगुण स्वीकार करते हैं:- 1) विवेक 2) साहस 3) संयम 4) न्याय

- प्लेटो के अनुसार सदगुण जन्म से होते हैं।

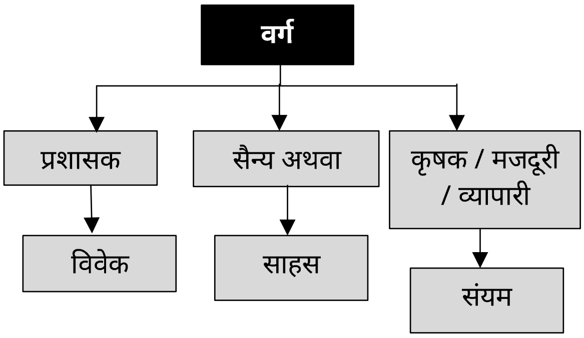

प्लेटो के अनुसार जब समाज का प्रत्येक वर्ग अपने कर्त्तव्य अथवा सदगुणों का समुचित रूप से पालन करता है, तब समाज में न्याय की उत्पत्ति होती है।

2. What is Goodwill according to Kant?
कांट के अनुसार 'शुभ-संकल्प' क्या है?

उत्तर- इमैनुएल कांट के अनुसार 'शुभ-संकल्प' (Good Will) यह उनके नैतिक दर्शन का केंद्रीय तत्व है।

- "विशुद्ध कर्त्तव्य चेतना से अभिप्रेरित हो कर्म करने का दृढ़ निश्चय अथवा दृढ़ निर्णय शुभ संकल्प कहलाता है।"
- यदि किसी व्यक्ति का संकल्प नैतिकता और कर्तव्य पर आधारित है, तो वह कार्य नैतिक रूप से सही होता है, चाहे उसके परिणाम अच्छे हों या बुरे।

3. State the meaning of the term 'Purushartha'.
'पुरुषार्थ' शब्द का अर्थ बताइए।

उत्तर- यह शब्द विशेष रूप से जीवन के उद्देश्य और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किए गए कर्मों को संदर्भित करता है। भारतीय दर्शन में पुरुषार्थ को चार मुख्य भागों में बांटा गया है, जो मानव जीवन के मुख्य उद्देश्य और लक्ष्यों को दर्शाते हैं। धर्म, अर्थ ,काम और मोक्ष, इन्हें पुरुषार्थ चर्तुष्टय भी कहते हैं।

4. What is meant by 'Ahimsa Parmo Darma'?
'अहिंसा परमो धर्मः' का अर्थ क्या है?

उत्तर- "अहिंसा परमो धर्मः" एक प्रसिद्ध संस्कृत वाक्य है, जिसका अर्थ है "अहिंसा (हिंसा से बचना) सबसे श्रेष्ठ धर्म है"। यह वाक्य भारतीय दर्शन और धर्म में अहिंसा के महत्व को दर्शाता है।

- इस वाक्य का सामान्य अर्थ यह है कि हिंसा (आत्मा या दूसरों के प्रति अत्याचार) से दूर रहना और शांति की स्थापना करना सर्वोत्तम धर्म है।

5. What is meant by 'Upaya Kaushalya' in Buddhism?
बौद्ध मत में 'उपाय कौशल' का अभिप्राय क्या है ?

उत्तर- **बौद्ध मत में 'उपाय कौशल'** इसका अभिप्राय है **"विवेकपूर्ण और सक्षम साधन"** जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने और दूसरों के दु:खों को समाप्त करने की दिशा में कार्य करता है।

'उपाय कौशल' के प्रमुख तत्व:

1. परिस्थितियों के अनुसार रास्ता चुनना:
2. सांसारिक कष्टों का निवारण:
3. प्रेरणा देने वाले उपाय
4. समय, स्थान और व्यक्ति के अनुसार

2024

1. 'सम्यक् चरित्र' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

- 'सम्यक् चरित्र' का अर्थ है 'सही आचरण', जो जैन धर्म में मोक्ष प्राप्त करने के तीन रत्नों में से एक है।
- इसका मतलब है कि पाप कर्मों को छोड़कर शुभ और नैतिक कार्यों में मन, वचन और काय से प्रवृत्त होना है, जैसे कि अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (अपरिग्रह) का पालन करना।

मुख्य बिंदु

- पापों का त्याग, शुभ कर्मों में प्रवृत्ति, राग-द्वेष से मुक्ति, सम्यक् दर्शन और ज्ञान आवश्यक

2. मेरा स्थान और तत्संबंधी कर्त्तव्य' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

- ब्रैडले -"मेरा स्थान और तत्संबंधी कर्तव्य" का अर्थ है कि हर व्यक्ति का समाज में एक विशेष स्थान होता है और उस स्थान से संबंधित उसके कुछ कर्तव्य होते हैं।
- यह अपनी योग्यता और शक्ति के अनुरूप काम करने, समाज और राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों (जैसे संविधान का पालन, एकता की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा) का पालन करने और व्यक्तिगत व आध्यात्मिक विकास को पूरा करने के बारे में है।

3. 'दु:ख-निरोध-मार्ग' क्या है?

उत्तर-

- दु:ख-निरोध-मार्ग वास्तव में आर्य अष्टांगिक मार्ग है। बुद्ध ने इस मार्ग को दु:ख से मुक्ति पाने का व्यावहारिक तरीका बताया है, जिसे 'मध्य मार्ग' भी कहा जाता है।
- चार आर्य सत्यों में से चौथा सत्य है, जिसका अर्थ है दु:ख की समाप्ति का मार्ग।

4. सद्गुण को माध्य के रूप में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

- **अरस्तू के सद्गुण माध्यम-सिद्धांत:** सद्गुण दो चरम सीमाओं के बीच का संतुलन है।
- एक ओर अधिकता और दूसरी ओर कमी।
- सद्गुण = अधिकता और कमी के बीच उचित मध्य अवस्था।
- यह संतुलन व्यावहारिक और नैतिक व्यवहार में दिखाई देता है।
- सही निर्णय और आचरण इसी मध्य में स्थित होते हैं।

5. 'नैतिक नियतिवाद' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

- नैतिक नियतिवाद एक दार्शनिक विचार है जो मानता है कि मनुष्य के सभी नैतिक निर्णय और कार्य पूरी तरह से पूर्व निर्धारण (पूर्व-निर्धारित कारणों) द्वारा नियंत्रित होते हैं। इसका आशय है कि प्रत्येक व्यक्ति के नैतिक कर्म, उसकी स्वतंत्र

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

इच्छा या 'फ्री विल' से नहीं, बल्कि पूर्ववर्ती परिस्थितियों, आनुवांशिकी, सामाजिक या मनोवैज्ञानिक कारणों से तय होते हैं।

Part - B
5 MARKS

2021

1. 'मनुष्य की नैतिक उन्नति समाज की सर्वांगीण उन्नति पर निर्भर करती है। 'विवेचना कीजिए।

'Men's moral advancement depends upon complete advancement of society.' Discuss.

उ. समाज समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से किसी व्यक्ति में मूल्यों को अध्यारोपित करता है। व्यक्ति का जैसे-जैसे समाज से संपर्क बढ़ता है, मूल्यों का विकास भी उत्तरोत्तर बढ़ता है। मीडिया, सामाजिक समूहों से वार्तालाप आदि से समाज के नैतिक मापदण्ड, सामाजिक गतिशीलता, परिवर्तन जैसे विचारों का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। इस तरह कोई समाज जितना नैतिक होगा, उतना ही यथाप्रभाव व्यक्ति पर पड़ेगा।

- विभिन्न धर्मों, जातियों व क्षेत्रों से संपर्क बढ़ने पर धैर्य, सहिष्णुता जैसे मूल्यों का विकास होता है। समाज में होने वाली विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्ति में सत्य व अहिंसा जैसे मूल्यों का विकास होता है। अत: मनुष्य की नैतिक उन्नति समाज की सर्वांगीण उन्नति पर निर्भर करती है।

2. "परिवार मनुष्य के नैतिक विकास की सबसे महत्त्वपूर्ण संस्था है। " इस कथन की समीक्षा कीजिए।

"Family is the most important element for the moral development of a man". Evaluate this statement.

उ. मनुष्य के मूल्य निर्माण में परिवार की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है, इसे मनुष्य की पहली पाठशाला भी कहा गया है। आरंभिक वर्षों में जैसे मूल्य परिवार के सदस्यों में होते है वैसे ही मूल्य व्यक्ति के जीवन में विकसित होते हैं।

- परिवार के भिन्न-भिन्न सदस्यों से भिन्न-भिन्न मूल्य को सीखा/ग्रहण किया जाता है यथा-माता से ममत्व, स्नेह, त्याग, धैर्य इत्यादि गुण। परिवार के सदस्यों में यदि नैतिक गुणों (यथा-त्याग, बड़ों का सम्मान, सहिष्णुता, नि:स्वार्थता, अनुशासन, गरीबों की सहायता बंधुत्व) की अधिकता है तो मनुष्य के जीवन में भी इन गुणों का विकास स्वत: हो जाएगा।
- अत: हम कह सकते है कि नैतिक मूल्यों के विकास में परिवार एक महत्त्वपूर्ण संस्था है।

3. कांट किस प्रकार सापेक्ष एवं निरपेक्ष आदेश के आधार पर अंतिम शुभ की व्याख्या करता है।

Explain the Kant's ultimate good on the basis of relative and categorical imperative.

उ. **कांट अंतिम शुभ के लिए तीन परिस्थितियों की बात करता है–**

(1) किसी कर्म को तात्कालिक संवेग, इच्छा से प्रेरित होकर करना,
(2) किसी कर्म को अपने हित के लिए करना।
(3) किसी कर्म को केवल कर्त्तव्य पालन की चेतना से प्रेरित होकर करना।

- इसमें केवल तीसरी स्थिति को ही कांट नैतिक शुभ मानते है तथा शेष दोनों को स्वीकार नहीं करता है। ये शेष दोनों स्थितियाँ सापेक्ष आदेश के अन्तर्गत आती है।
- तीसरी स्थिति निरपेक्ष आदेश को दर्शाती है, जिसमें मनुष्य अपने भावात्मक पक्ष से निरपेक्ष रहते हुए शुभ संकल्प के अनुसार कार्य करता है तो वह नैतिक शुभ होता है।

4. आमतौर पर एक स्वस्थ और उत्पादक जीवन जीने के लिए व्यक्ति की न्यूनतम बुनियादी जरुरतें क्या मानी गई हैं? इन न्यूनतम बुनियादी जरुरतों को सुनिश्चित करने में एक प्रशासक की क्या जिम्मेदारी है?

What are generally considered to be the minimum basic needs of an individual to lead a healthy and productive life? What are the responsibilities of administrators in ensuring this basic minimum?

उ. साधारणत: व्यक्ति को स्वस्थ और उत्पादक जीवन यापन हेतु भोजन, वस्त्र और आवास की सुविधा प्राथमिक आवश्यकताएँ है। इसमें हम शिक्षा या साक्षरता को भी सम्मिलित कर सकते है।

- मानव विकास सूचकांक ने नागरिकों के जीवन में तीन प्राथमिक आधार माने हैं – शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा। न्यूनतम बुनियादी जरुरत को भी शारीरिक तौर पर न्यूनतम कैलोरी की आवश्यकता से मापा जा सकता है तथा उपरोक्त मापों के आधार पर उनके लिए उचित एवं आवश्यक बुनियादी जरुरतें उपलब्ध की जानी चाहिए।
- इन बुनियादी जरुरतों को पूरा करने के लिए सरकारी नीतियों, कार्यक्रमों व योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन प्रशासक द्वारा किया जाना चाहिए।

5. लोक सेवा की उत्कृष्टता के लिए आवश्यक प्रमुख नैतिक मूल्य कौन से हैं?

What are the core ethical values required for excellence in civil service?

उ. **प्रमुख नैतिक मूल्य –**

- भारत में सिविल सेवकों को प्राकृतिक न्याय, संवैधानिक मूल्य, संवैधानिक प्रावधान, कानून, विभागीय नियमों के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए।
- लोक सेवा की उत्कृष्टता के लिए सिविल सेवकों का राजनीतिक दृष्टिकोण तटस्थ होना चाहिए।
- संस्थागत संसाधनों का निर्माण और उनके उपयोग करने की क्षमता होनी चाहिए।
- नौकरशाही में सिर्फ शक्ति का प्रयोग उचित नहीं है। हमें जनता की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और संवेदनाओं को वरीयता दी जानी चाहिए।
- सिविल सेवको में भावनात्मक स्तर पर सहानुभूति, करुणा, दया, जनसेवा, नि:स्वार्थता, भावनात्मक बुद्धिमता जैसी अभिवृत्तियाँ होनी चाहिए।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- नोलन कमेटी (1995) के द्वारा दिए गए सात गुण नि:स्वार्थता, सत्यनिष्ठता, वस्तुनिष्ठता, जवाबदेही, खुलापन, ईमानदारी व नेतृत्व भी प्रशासनिक उत्कृष्टता के लिए आवश्यक है।

2018

1. अतिवाद घातक है। हम इससे कैसे बच सकते हैं?
Extremitism is dangerous. How can we avoid it?

उ. किसी विचार को चरम सीमा तक अपनाना अतिवाद कहलाता है। इसमें व्यक्ति अपने विचार को सर्वमान्य मानकर विचार के विरोधियों के प्रति हिंसक हो जाता है, अत: यह घातक है। अतिवाद से बचने के निम्नलिखित तरीके हैं-
- मानवीयता आधारित संकल्पना को महत्त्व देना।
- निर्णय करते समय भागीदारिता को बढ़ाना।
- देश की सामाजिक-सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करना।
- समानुभूति, सहिष्णुता, सत्यनिष्ठा, तटस्थता, निष्पक्षता जैसे गुणों का विकास करना।
- समूह भावना को महत्ता देना, संवेगात्मक बुद्धि को बढ़ाने का प्रयास करना।
- विधि के शासन का पालन करना।
- रचनात्मक व सृजनात्मक कार्य संस्कृति को प्रोन्नत करना।

2. मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन में समाज की भूमिका समझाइये।
Explain the role of society in inculcating human values.

उ. मूल्य वे आदर्श या मानक हैं, जो किसी समाज, संगठन या व्यक्ति हेतु दिशा निर्देश के रूप में कार्य करते हैं। व्यक्ति में इनका विकास परिवार, शिक्षण संस्थाओं व समाज के माध्यम से होता है।
- समाज समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से किसी व्यक्ति में मूल्यों को अधिरोपित करता है। व्यक्ति का जैसे-जैसे समाज से संपर्क बढ़ता है, मूल्यों का विकास भी उत्तरोत्तर बढ़ता है। मीडिया, सामाजिक समूहों से वार्तालाप आदि से समाज के नैतिक मापदण्ड, सामाजिक गतिशीलता, परिवर्तन जैसे विचारों का प्रभाव व्यक्ति पर पड़ता है। विभिन्न धर्मों, जातियों व क्षेत्रों से संपर्क बढ़ने पर धैर्य, सहिष्णुता जैसे मूल्यों का विकास होता है। समाज में होने वाली विभिन्न धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों से व्यक्ति में सत्य व अहिंसा जैसे मूल्यों का विकास होता है।
- सारांशत: समाज मनुष्य के एकांगी विकास को वरीयता न देकर पूर्ण विकास को प्रोत्साहित करता है।

3. आपके अनुसार प्रशासनिक अधिकारी के मानसिक तनाव के मुख्य कारण क्या होते हैं? समझाइये।
What are the main causes of mental stress in an administrator according to you? Explain.

उ. एक प्रशासनिक अधिकारी के मानसिक तनाव के कारणों को निम्नलिखित श्रेणियों के अंतर्गत समझा जा सकता है-
- **कार्यभार** – क्षमता से अधिक कार्यभार (गुणात्मक एवं परिमाणात्मक) एक प्रशासनिक अधिकारी में तनाव का प्रमुख कारण है।
- **कार्य संबंधी नैराश्य** – प्रशासक जब अपनी जवाबदेहिता व भूमिका को लेकर असमंजस में रहता है तब उसमें कार्य संबंधी नैराश्य उत्पन्न होता है, जो तनाव का कारण बनता है।
- **कार्य संबंधी परिवर्तन** – पदोन्नति, स्थानांतरण आदि की स्थिति में नये कार्य में समायोजन न कर पाने से तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है।
- **दूसरों के लिए उत्तरदायित्व** – जो व्यक्ति दूसरों के लिए उत्तरदायी होता है, वह अपेक्षाकृत ज्यादा तनाव में रहता है।
- **अन्य स्रोत** – भौतिक वातावरण, अंतर-वैयक्तिक संबंध संगठन संरचना व नेतृत्व, पारिवारिक समस्याएँ राजनीतिक व आर्थिक असुरक्षा भी तनाव के मुख्य कारण हैं।

इन सभी मानसिक कारकों से उभरने के लिए तनाव प्रबंधन तकनीकों यथा योग, ध्यान, संगीत सुनना, सैर, व्यायाम इत्यादि का प्रयोग किया जाना चाहिए।

4. "श्रम एक पूँजी है और जीवधारी पूँजी अक्षय है, मैं पूँजी और श्रम में न्यायसंगत संबंध की स्थापना करना चाहता हूँ। मैं एक का अन्य के ऊपर प्रभुत्व नहीं चाहता हूँ।" महात्मा गाँधी के संदर्भ में व्याख्या कीजिए।
'Labour is capital and the living capital is inexhaustible. I want to establish equitable relationship between capital and labour. I do not wish for the supremacy of the one over the other. Discuss in the context of Mahatma Gandhi.

उ. उपर्युक्त कथन के माध्यम से गाँधी जी का तात्पर्य था कि श्रम एवं पूँजी एक दूसरे के पूरक हैं, ये दोनों एकता व सामंजस्य की भावना के साथ आगे बढ़े व एक दूसरे की सहायता करें।
- यह कथन गाँधी जी के न्यासिता के सिद्धांत को प्रदर्शित करता है। जिसके अनुसार पूँजीपति अपने साथ के श्रमिकों के न्यासी है, अत: उन्हें श्रमिकों के भौतिक व नैतिक दोनों कल्याण सुनिश्चित करने चाहिए। साथ ही श्रमिकों को भी अधिकारों की माँग से पूर्व कर्त्तव्य पालन पर ध्यान देना चाहिए। गाँधी जी का यह विचार पूँजीवाद एवं मार्क्सवाद के बीच का प्रकृति संगत मार्ग है, जिसे अपनाने से वैश्विक शांति, न्याय और आर्थिक समानता के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

5. राजनीतिक तटस्थता सुशासन सुनिश्चित करती है। व्याख्या कीजिए।
Political neutrality brings better administration. Discuss.

उ. राजनीतिक तटस्थता से तात्पर्य किसी राजनीतिक दल या उसकी विचारधारा से प्रभावित हुए बिना निष्पक्ष रहते हुए अपने कर्त्तव्य का पालन करना है।
- राजनीतिक रूप से तटस्थ प्रशासन संविधान और नियमों, विनियमों के अनुसार कार्य करता है, इससे राजनेता और जनता के मध्य विश्वास के अंतराल को भरने में मदद मिलती है।
- इससे प्रशासन में पारदर्शिता, मितव्ययिता, जवाबदेहिता व कार्यकुशलता का समावेश होता है और संसाधनों के न्यायपूर्ण

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

वितरण को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार राजनीतिक तटस्थता से प्रशासन का क्रियान्वयन इस प्रकार होता है कि वह सकारात्मक परिणाम देता है एवं सुशासन सुनिश्चित करता है।

2023

1. State te distinctive features of Human Values.
मानवीय मूल्यों के विभेदक लक्षणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर- मानवीय मूल्य वे गुण और सिद्धांत हैं जो व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर करने में मदद करते हैं और समाज में सकारात्मक संबंधों की स्थापना करते हैं। ये मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व, आचार-व्यवहार और समाज में उसकी भूमिका को प्रभावित करते हैं। इन विभेदक लक्षणों के माध्यम से, मानवीय मूल्य समाज में शांति, सद्भाव और विकास के लिए एक मजबूत नींव तैयार करते हैं। वे हमारे आचार-व्यवहार, संबंधों और समाज की समृद्धि को बढ़ाते हैं।

मानवीय मूल्यों के विभेदक लक्षणों में प्रमुख हैं :-

1. आदर्श और नैतिकता
2. समाज सेवा
3. समानता और न्याय:
4. सम्मान और सहिष्णुता
5. सच्चाई और ईमानदारी
6. सहानुभूति
7. दया
8. संवेदनशीलता
9. आत्मनिर्भरता
10. सहनशीलता
11. उत्तरदायित्व
12. सार्थकता

2. How can contemporary society benefit from the Vedic ideaof 'Rna'?
समसामयिक समाज 'ऋण' की वैदिक अवधारणा से किस प्रकार लाभान्वित हो सकता है?

उत्तर- ऋण की वैदिक अवधारणा समसामयिक समाज के लिए एक गहरी नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शिका हो सकती है।

- यह केवल भौतिक और आर्थिक ऋण को ही नहीं, बल्कि सामाजिक, पारिवारिक और आध्यात्मिक ऋण को भी महत्वपूर्ण मानती है, जिससे व्यक्ति को अपने कर्तव्यों का एहसास होता है। अगर समसामयिक समाज इस सिद्धांत को आत्मसात करता है, तो इससे सामाजिक सहयोग, आध्यात्मिक संतुलन, और सकारात्मक जीवन दृष्टिकोण का निर्माण हो सकता है, जिससे समाज में अधिक सद्भाव, शांति, और समृद्धि स्थापित होगी।
- इस 'ऋण' के रूप में स्वीकार करना समाज में नैतिकता और जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करता है।
- समर्पण, परोपकार और सामूहिक भलाई की अवधाणा के द्वारा समाज में सहयोग, भाईचारे और सह-अस्तित्व का वातावरण उत्पन्न किया जा सकता है।

इस प्रकार, वैदिक ऋण की अवधारणा समाज में आत्मनिर्भरता और एकता को बढ़ावा दे सकती है।

3. What does Aurobindo mean by 'Life Divine'?
'दिव्य जीवन' से अरविंद का क्या आशय है?

उत्तर- यह केवल भौतिक जीवन से हटकर एक **आध्यात्मिक जीवन** जीने की स्थिति है, जिसमें व्यक्ति अपने अस्तित्व के उच्चतम रूप को पहचानता है और अपने जीवन को ईश्वरीय चेतना से पूर्ण करना है।

- दिव्य जीवन का अर्थ है भौतिक, मानसिक और आध्यात्मिक चेतना को एकीकृत कर जीवन को उच्चतर स्तर पर उठाना। अरविंद के अनुसार, यह जीवन केवल आत्मज्ञान और ध्यान तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज और विश्व के कल्याण के लिए सक्रिय रूप से योगदान करना भी एक हिस्सा है।
- **'दिव्य जीवन' के कुछ प्रमुख पहलू:**
  1. आध्यात्मिक उत्थान
  2. ईश्वर के साथ एकता
  3. सत्यम, शिवम, सुंदरम
  4. आध्यात्मिक साधना
  5. समाज और ब्रह्मांड का दिव्य रूप

4. What according to Gandhi is the ideal of 'Swaraj'?
गांधी के अनुसार 'स्वराज' का आदर्श क्या है?

उत्तर- गांधी जी के अनुसार 'स्वराज' का आदर्श स्वतंत्रता का एक समग्र दृष्टिकोण था, जिसमें न केवल बाहरी राजनीतिक स्वतंत्रता की आवश्यकता थी, बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक स्वतंत्रता भी महत्वपूर्ण थी।

आत्मनिर्भरता, सत्य, अहिंसा, और साधारण जीवन के सिद्धांतों पर आधारित यह स्वराज का विचार आज भी समाज में आत्मनिर्भरता, समानता, और समान अधिकारों के आदर्श को प्रोत्साहित करता है।

- गांधी जी का मानना था कि केवल बाहरी स्वतंत्रता से समाज की प्रगति नहीं हो सकती, बल्कि आंतरिक स्वतंत्रता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है।
- गांधी के अनुसार, स्वराज का मतलब अपने आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता को बढ़ाना है, ताकि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को स्वतंत्र रूप से, बिना किसी बाहरी दबाव के जी सके। उनका विचार था कि जब व्यक्ति आत्म निर्भर हो, तो समाज और राष्ट्र भी सशक्त होते हैं।
- स्वराज में अहिंसा और सत्य का पालन करना अनिवार्य है। इसी से ही शान्ति और सामंजस्य रख सकते हैं।
- **गांधी के अनुसार 'स्वराज' का आदर्श -**
  1. आत्मनिर्भरता
  2. सच्चा स्वराज
  3. सत्य और अहिंसा
  4. लोकतंत्र और भागीदारी
  5. स्वच्छता और सरलता
  6. आध्यात्मिक और नैतिक सशक्तिकरण

5. What is 'Surplus in man', according to Tagore?
टैगोर के अनुसार, 'मानव का आधिक्य' क्या है?

उत्तर- टैगोर के अनुसार 'मानव का आधिक्य' एक गहरी आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टि को दर्शाता है, जिसमें मनुष्य की सृजनात्मकता, आध्यात्मिकता, करुणा, और सच्चाई की खोज प्रमुख हैं।

- 'मानव का आधिक्य' मानव के भीतर वह अतिरिक्त गुण है, जो उसे अन्य जीवों के अलग और विशिष्ट बनाता है।
- यह आधिक्य उसे ईश्वर के साथ एकता, स्वतंत्रता, और संबंधों की गहराई की ओर अग्रसर करता है, जो उसे केवल भौतिक अस्तित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कल्पना, रचनात्मकता, सौंदर्यबोध प्रेम और आत्माभिव्यक्ति की क्षमता में प्रकट होता है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- कला, साहित्य, संगीत और धर्म मानव के इसी आधिक्य के उदाहरण हैं, जो उसके अस्तित्व को प्रकृति के सामान्य नियमों से ऊपर ले जाते हैं।

2024

1. क्या प्रशासकीय वस्तुनिष्ठता अनिवार्यतः प्रशासनिक सत्यनिष्ठता की पूर्वापेक्षा रखती है?

उत्तर-

– प्रशासकीय वस्तुनिष्ठता का अर्थ है बिना व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों, भावनाओं या बाहरी प्रभावों के, तथ्यों और तर्क के आधार पर निर्णय लेना।

– प्रशासकीय वस्तुनिष्ठता के प्रमुख पहलू-निष्पक्षता, तर्कसंगतता, पारदर्शिता, भ्रष्टाचार में कमी, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS), न्यायिक निष्पक्षता।

– "प्रशासक का वह आधारभूत मूल्य जिसमें वह स्वयं के प्रति, दूसरों के प्रति तथा अपने कार्यों के प्रति पूर्णतः निष्ठा और ईमानदारी का पालन करता है, सत्यनिष्ठा कहलाता है।"

– पूर्व अपेक्षा क्यों –

(i) सत्यनिष्ठ व्यक्ति निर्णय वस्तुनिष्ठ आधार पर ही लेता है।

(ii) सत्यनिष्ठा निर्णय-निर्माण की प्रक्रिया को नैतिक दिशा देती है।

(iii) भ्रष्टाचार का विरोध वस्तुनिष्ठता के बिना सम्भव नहीं हैं।

– अतः प्रशासनिक वस्तुनिष्ठता प्रशासनिक सत्यनिष्ठा की एक मौलिक और अनिवार्य पूर्वापेक्षा मानी जाती है, वस्तुनिष्ठता आधार है, और सत्यनिष्ठा उच्चतर नैतिक स्तर।

2. औपचारिक शिक्षा अथवा सामाजिक अन्तर्निवेशन: उक्त दोनों में से उत्तम प्रशासन के निर्माण के लिए क्या अधिक महत्त्वपूर्ण है?

उत्तर-

– **औपचारिक शिक्षा-**

– प्रशासनिक प्रक्रिया, नीति-निर्माण, कानूनी समझ, तकनीकी दक्षता के लिए अनिवार्य।

– योग्यता का आधार, उच्च राज्य सेवाओं की शर्त, प्रशासनिक नवाचार का स्रोत।

– परंतु, केवल औपचारिक शिक्षा से संवेदनशील, नैतिक, लोकहितकारी प्रशासन नहीं बन पाता।

– **सामाजिक अन्तर्निवेशन-**

– किसी व्यक्ति के मूल्यों, नैतिकता, दृष्टिकोण, चरित्र तथा व्यवहार-आधारित प्रतिबद्धता को विकसित करता है। परिवार, समाज, संस्कृति, कार्य-पर्यावरण प्रशासनिक नैतिकता को गहराई से प्रभावित करता है।

– नैतिकता, सहानुभूति, सार्वजनिक मूल्य, सेवा-भावना, सांस्कृतिक समझ का विकास।

– अतः उत्तम प्रशासन में औपचारिक शिक्षा व सामाजिक अन्तर्निवेशन का संतुलन अत्यावश्यक है, जिससे पारदर्शी सुशासन, लोक कल्याणकारी राज्य व न्याय की स्थापना हो सके।

3. क्या आपके विचार में प्रशासनिक निर्णय राजनैतिक पूर्वाग्रह से मुक्त होते हैं?

उत्तर-

– आदर्श स्थितियों में प्रशासनिक निर्णय तथ्य, नियम, नीति और जनहित के आधार पर लिए जाते हैं।

– प्रशासनिक वस्तुनिष्ठता, निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा ही प्रशासनिक ढांचे का बुनियादी मूल्य माने जाते हैं।

– ऐसे में, प्रशासनिक निर्णय राजनैतिक पूर्वाग्रह से मुक्त होने चाहिए।

– लोक प्रशासन का कार्य क्षेत्र अक्सर राजनैतिक नेतृत्व, सरकार और विधायिका की नीतियों व निर्देशों से प्रभावित होता है।

– वास्तविकता में, प्रशासनिक निर्णय कभी-कभी राजनैतिक दबाव, विचारधारा, लाभ या सरकार की प्राथमिकताओं के कारण प्रभावित हो जाते हैं।

– प्रशासन के उच्च अधिकारी भी राजनीतिक नियुक्तियाँ/ट्रांसफर, नीति-अनुकूल आदेश, जन-प्रतिनिधियों की अपेक्षाओं के दबाव में रहते हैं।

– आदर्श रूप में प्रशासनिक निर्णय राजनैतिक पूर्वाग्रह से मुक्त रहने चाहिए।

– लेकिन, व्यवहार में राजनैतिक माहौल, सत्तारूढ़ दल की नीतियाँ, व्यक्तिगत/दलीय हित प्रशासन को प्रभावित कर सकते हैं।

– प्रशासन में सत्यनिष्ठा, वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता ही राजनैतिक पूर्वाग्रह को रोकने के सर्वोत्तम उपाय हैं।

4. "गहन नैतिकता के अभाव में उच्च नागरिकी संभव नहीं है, चाहे वह इस नाम से न भी जानी जाती हो।" - आर.डब्ल्यू. इमर्सन। चर्चा कीजिए।

उत्तर- गहन नैतिकता-

– इमर्सन का अभिप्राय है कि नागरिक जीवन और समाज का असली उत्थान, समृद्धि और सुदृढ़ता - केवल बाह्य नियमों, कानूनों या प्रशासनिक संरचनाओं से नहीं, बल्कि व्यक्तियों के भीतर बसी गहरी नैतिकता, ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से संभव है।

– यहाँ "गहन" शब्द नैतिकता की गहराई, व्यापकता और वास्तविकता पर बल देता है; यानी केवल औपचारिक या दिखावटी नैतिकता नहीं, बल्कि हर व्यक्ति की सोच, व्यवहार और निर्णय में नैतिकता की जड़ हो।

उच्च नागरिकता-

– 'उच्च नागरिकता' का तात्पर्य है - सर्वोत्तम नागरिक आचरण, कर्त्तव्यपालन, सामाजिक और राष्ट्रहित को सर्वोच्च प्राथमिकता देना।

– इसमें विधि पालन, सामाजिक जिम्मेदारी, सहिष्णुता, समरसता, और लोककल्याण भावना शामिल है।

नैतिकता और नागरिकता का संबंध-

– इमर्सन की सामाजिक-दार्शनिक दृष्टि में नागरिकता की गुणवत्ता, नैतिकता पर निर्भर है।

– नैतिकता के बिना कोई भी बाह्य ढाँचा या सामाजिक संगठन टिकाऊ और वास्तविक नागरिकता नहीं ला सकता।

– भले ही समाज में "नैतिकता" शब्द का औपचारिक प्रयोग न हो, पर उसके मूल्यों - जैसे ईमानदारी, सत्य, परोपकार, सामाजिक उत्तरदायित्व का समावेश ही असली 'उच्च नागरिकता' है।

5. सुखवाद किस प्रकार विरोधाभासी हो सकता है? चर्चा कीजिए।

उत्तर-

– सुखवाद वह दर्शन है जिसमें जीवन का अंतिम लक्ष्य सुख प्राप्त करना और दुःख से बचना माना जाता है।

– लेकिन जब हम सुखवाद को व्यवहारिक और दार्शनिक स्तर पर परखते हैं, तो उसमें कई अंतर्विरोध दिखाई देते हैं।

– सुखवाद यह मानता है कि मनुष्य का परम लक्ष्य केवल सुख प्राप्त करना है, किंतु व्यवहार में यह सिद्धांत कई बार विरोधाभासी हो जाता है।

– हर व्यक्ति के लिए सुख की परिभाषा और उसकी प्राप्ति के साधन अलग-अलग होते हैं, जिससे किसी का सुख दूसरे के लिए दुःख या हानि का कारण बन सकता है।

– तात्कालिक सुख अनेक बार दीर्घकालिक दुःख को जन्म देता है, जैसे कि भोग-विलास, नशा या अनैतिक कार्य। यदि समाज के सभी लोग केवल व्यक्तिगत आनंद के लिए ही प्रयास करें, तो सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिकता और कर्त्तव्यों का क्षय संभव है।

– इस प्रकार सुखवाद में सुख की सार्वभौमिकता, नैतिकता एवं दीर्घकालिक दृष्टि की अनदेखी उसके भीतर निहित विरोधाभास को उजागर करती है।

❑❑❑

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

Part - C
10 MARKS

2021

1. **"अनिवार्यत: संबंधित होने के कारण साधनों को साध्य से पृथक नहीं किया जा सकता, अत: वास्तविक और स्थाई सफलता के लिए दोनों का शुभ होना आवश्यक है। "गाँधी नीतिशास्त्र के संदर्भ में उक्त टिप्पणी को स्पष्ट करें।**
"Due to necessary relation, means cannot be separated from ends. Therefore, both must be favourable for real and lasting success." Explain the above comment in the context of Gandhian ethics.

उ. वास्तविक एवं स्थाई सफलता के संदर्भ में विचारकों के अलग-अलग मत है। कुछ विचारक साध्य की नैतिकता पर बल देते हैं, जबकि कुछ साध्य की पवित्रता पर, जैसे मार्क्स के अनुसार समानता साध्य है। इसके लिए वह हिंसा को भी नैतिक मानते है, जबकि गाँधी जी साध्य की पवित्रता के साथ-साथ साधन की पवित्रता को भी स्वीकार करते है। उनके अनुसार साध्य लक्ष्य है तो साधन लक्ष्य प्राप्ति का माध्यम।

- अत: जब लक्ष्य का माध्य पवित्र होगा, तभी लक्ष्य पवित्र हो सकेगा। गाँधीजी के अनुसार साधन बीज के समान है तो साध्य वृक्ष के समान है। गाँधी जी का मानना है कि अगर बीज में दोष या विकृति हुई तो वृक्ष भी प्रभावित होगा अर्थात् दूषित होगा। इसलिए स्वतंत्रता आंदोलन में स्वतंत्रता के साध्य को प्राप्त करने के लिए अहिंसा को साधन के रूप में प्रयोग में लिया गया।
- साधन व साध्य दोनों में पवित्रता होने पर व्यक्ति में नैतिक बल का विकास होता है, जिससे निडरता, कर्त्तव्य दृढ़ता, कार्य संतोष आदि गुणों में वृद्धि से व्यक्ति का नैतिक विकास होता है। अत: गाँधी जी वास्तविक एवं स्थायी सफलता के लिए साधन व साध्य दोनों के शुभ होने पर बल देते हैं।

2. **'नैतिक निर्णय' लेने में महत्त्वपूर्ण कारकों को समझाइए। यदि नैतिक निर्णय प्रशासनिक निर्णय के विरुद्ध हो, तो आप दोनों में किस प्रकार समन्वय करेंगे? सोदाहरण समझाइए।**
Explain the factors essential for "Ethical decision" making. In case of ethical decision being against to administrative decision, how will you harmonise them? Explain with examples.

उ. नैतिक निर्णय लेना एक संज्ञानात्मक प्रक्रिया है, जिसमें नैतिक सिद्धांतो, नियमों, सद्गुणों के अनुरूप विकल्पों का मूल्यांकन और चयन करना शामिल है।

- नैतिक निर्णय लेने में महत्त्वपूर्ण कारक –
(1) तथ्यों की जानकारी प्राप्त करना।
(2) नैतिक मुद्दे को परिभाषित करना।
(3) हितधारकों की पहचान करना।
(4) प्रभाव की पहचान करना।
(5) संभावित विकल्प की पहचान।
(6) सही नैतिक विकल्प चुनना।
- कई बार नैतिक निर्णय एवं प्रशासनिक निर्णय की दुविधा के बीच फैसला नहीं कर पाते कि कौन-सा कृत्य सही है और कौन-सा गलत है। अर्थात् जब किसी एक के पक्ष में निर्णय लेते समय दूसरे पक्ष के साथ अनैतिक हो जाने का डर हो, उदाहरण के लिए यदि कोई गरीब भूखा बच्चा किसी दुकान से खाना चुरा लेता है या कोई खाने की वस्तु चुरा लेता है और दुकानदार कार्रवाई की माँग करता है।
- यदि नैतिक निर्णय प्रशासनिक निर्णय के विरुद्ध हो तो सबसे पहले उस निर्णय की उपयोगिता और प्रभावित क्षेत्र की समीक्षा करनी चाहिए। साथ ही देखा जाए कि निर्णय नैतिक अधिकारों की रक्षा करता है और ऐसे निर्णय में सभी का कल्याण दृष्टिगत हो।
- प्रशासनिक निर्णय के विरुद्ध जाने पर यथाशीघ्र निर्णय के बारे में शीर्षस्थ अधिकारियों को अवगत कराना चाहिए तथा ऐसी स्थिति पुन: उपस्थित न हो, इसके लिए नीतिगत प्रस्ताव भी साथ में भेजा जाना चाहिए।

3. **"एक दूसरे की सफलता बेहतर प्रशासन के लिए सीख देती है।" इस कथन का विश्लेषण उदाहरणों द्वारा कीजिए।**
"Each other's success teaches a lesson for better governance." Analyze this statement with examples.

उ. उद्देश्य विशेष के लिए किया गया सामूहिक प्रयास ही प्रशासन है। अर्थात् सफल प्रशासन हेतु संगठन के सभी सहभागियों का परस्पर सहयोग-समन्वय व टीम वर्क से प्रयास करना लाजमी है। उदाहरण स्वरूप एक कार्यालय के समस्त स्टाफ में से किसी दो लिपिकों के अत्यंत उत्कृष्टता पूर्वक कार्यशैली से लक्ष्य प्राप्ति में सफलता हासिल होती है। इस हेतु उस कार्यालय प्रधान/मुखिया को जिला प्रशासन द्वारा राष्ट्रीय पर्व समारोह में सम्मानित किया गया। अभिप्रेरणा के सिद्धांत के अनुसार कार्यालय प्रधान में मनोबल का विकास होकर और बेहतरीन प्रशासक होने के गुण विकसित होते है।

- इसी प्रकार प्रशासकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम में यथा LBSNAA में Case study पढ़ाना, वरिष्ठ प्रशासकों द्वारा गेस्ट लेक्चर देना, IIPA जैसे संस्थानों द्वारा प्रकाशन, एक समय पश्चात् ट्रेनी का पुन: प्रशिक्षण, PM सिविल सेवा पुरस्कार देना वस्तुत: सफलता के अनुभवों से लाभ लेने के लिए किए जाते है। इस प्रकार अनुभवों से बेहतर सीख, संसाधनों का उचित दोहन, गलतियाँ का कम दोहराव, समन्वय, उच्च मनोबल जैसे गुण सुशासन का विकास करते हैं।

2018

1. **भगवद् गीता किस तरह अर्जुन के समक्ष द्वन्द्व का निराकरण करती है? प्रशासनिक अधिकारी के रूप में आप प्रशासनिक दुविधा के निराकरण में किस तरह गीता के सिद्धान्तों का प्रयोग कर सकते हैं?**
How does Bhagwad Gita resolve dilemma of Arjun in the time of crisis? As an administrator how will you apply the tenets of Geeta when confronted with administrative dilemma?

उ. भगवद् गीता अपने नैतिक उपदेशों के द्वारा अर्जुन के समक्ष द्वन्द्व का निराकरण करती है। गीता के वे सिद्धान्त जिनसे अर्जुन के द्वन्द्व का निराकरण हुआ, वे प्रशासनिक दुविधा के निराकरण में भी निम्नलिखित प्रकार से उपयोगी हैं-

- **निष्काम कर्म योग** – यह सिद्धांत प्रशासकों को फल की इच्छा से निवृत्त होकर सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता व कुशलता के साथ कर्म करने का संदेश देता है।
- **स्वधर्म पालन–** यह प्रशासकों को दायित्वानुसार कर्त्तव्य पालन व अहस्तक्षेप के सिद्धान्त हेतु प्रेरित करता है।
- **स्थित प्रज्ञ** – यह अवधारणा प्रशासक को हर परिस्थिति में समान व्यवहार करने व व्यक्तिगत हितों पर सामाजिक हित को प्राथमिकता देकर नैतिक द्वन्द्व का निराकरण करती हैं।
- **कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था** – यह संकल्पना प्रशासकों को जातिवाद, छुआछूत आदि सम्प्रत्ययों से ऊपर उठकर कर्म के आधार पर व्यक्ति के मूल्यांकन को प्रेरित करती है।
- **पुरुषार्थ व्यवस्था–** इस सिद्धांत से सार्वजनिक व निजी जीवन में नैतिकता रखने, लालच, भ्रष्टाचार को त्यागने व कर्तव्य पालन करने का संदेश प्राप्त होता है।

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

- **ज्ञान, कर्म, भक्ति समन्वय–** ज्ञान, योग, लाभ, निंदा, प्रशंसा से विरक्त रहने, कर्म-योग, निरन्तर कर्म में प्रवृत्त रहने तथा भक्ति योग दायित्वानुसार कर्तव्यपालन का संदेश देती है।
  निष्कर्षत: गीता अपने इन सिद्धांतों द्वारा प्रशासकों में सत्यनिष्ठा, सहिष्णुता, वस्तुनिष्ठता, समानुभूति, समर्पण भाव के मूल्यों को अंकुरित करती है, जिससे वह अपने समक्ष आने वाली दुविधाओं का निराकरण करने में सक्षम हो पाता है।

2. लोकनायकों व सुधारकों के उपदेश कभी भी पुराने नहीं होते हैं। आधुनिक संदर्भ में उनकी महत्ता को उजागर कीजिए।
Teachings of leaders and reformers never grow old. Bring out their significance in modern context.

उ. लोकनायकों व सुधारकों के उपदेश आधुनिक समय में भी उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं, जितने तत्कालीन समय में थे। वर्तमान में इनकी महत्ता को निम्नलिखित बिन्दुओं से समझा जा सकता है-

- **सामाजिक क्षेत्र में –** गौतम बुद्ध का आष्टांगिक मार्ग, महावीर के पंचमहाव्रत, गुरु नानक के दस विचार, बाबा रामदेव की सामाजिक समरसता, दयानन्द सरस्वती, ज्योति बा फुले, नारायण गुरु, डॉ. अम्बेडकर जैसे चिंतकों के विचार वर्तमान में भी समाज को एकता के सूत्र में बाँधते हैं।
- **राजनीतिक क्षेत्र में –** कौटिल्य व शुक्राचार्य का प्रजा हित में ही राजा का हित, अरविन्द घोष का व्यक्तिगत स्वतंत्रता का विचार, पंडित नेहरू का संसदीय लोकतंत्र, गाँधी जी का ग्राम स्वराज, विकेन्द्रीकरण का विचार आज की राजनीति के मुख्य आधार हैं।
- **आर्थिक क्षेत्र में –** गाँधी का न्यासिता सिद्धांत, तिलक व गाँधी के स्वदेशी विचार, कौटिल्य का कर संबंधी विचार, बाबा साहब अम्बेडकर के विचार आज भी अर्थव्यवस्था में अमिट छाप छोड़े हुए हैं।
- **पर्यावरणीय क्षेत्र में-** जाम्भोजी द्वारा वृक्ष रक्षा, जीव रक्षा, गाँधी का प्रकृति चिंतन, रवीन्द्रनाथ टैगोर की शिक्षा में वसुधा संरक्षण, वर्तमान की प्राकृतिक आपदाओं को कम करने में सहायक हैं।
  निष्कर्षत: लोकनायकों का चिंतन एक काल तक सीमित न रह कर सर्वकालिक होता है, अत: वर्तमान परिस्थितियों में भी यह प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण हैं।

3. प्लेटो के न्याय सिद्धान्त में साहस और संयम अन्तर्निहित है। आधुनिक समाज व प्रशासन में क्या वे आज भी युक्ति संगत हैं?
Plato’s theory of justice includes courage and temperance. Are they still needed in modern society and administration?

उ. प्लेटो ने अपने सद्गुण विचार में चार प्रकार के सद्गुणों-विवेक, संयम, साहस और न्याय का उल्लेख किया है। न्याय को सर्वोच्च अथवा मौलिक सद्गुण मानते हुए प्लेटो ने न्याय का तात्पर्य ‘दूसरों के अधिकारों की रक्षा करना‘ तथा अपना निर्दिष्ट कार्य करना बताया है ।

- व्यक्तिगत स्तर पर प्लेटो के मतानुसार जो व्यक्ति अपने साहस व संयम को विवेक के अधीन रखता है, उसमें न्याय सद्गुण उत्पन्न हो जाता है। राज्य स्तर पर उपस्थित तीनों वर्ग क्रमश: प्रशासक (विवेक), सैनिक (साहस) तथा व्यापारी (संयम) यदि एक दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप न करें तथा सैनिक व व्यापारी वर्ग, प्रशासक के अधीन रहें तो राज्य न्यायपूर्ण होगा, इस प्रकार प्लेटो के न्याय सिद्धांत में साहस व संयम अंतर्निहित है।
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भी सामाजिक स्तर पर समाज के नागरिकों को चाहिए कि वे अपने अधिकारों की तुलना में दूसरों के अधिकारों को वरीयता दें साथ ही अपने कर्त्तव्यों का पालन उचित रीति से करें, जिससे समाज का दबित, वंचित वर्ग भी समाज की मुख्य धारा के साथ खड़ा हो सके। प्रशासनिक क्षेत्र में आज लोकसेवकों को अधिकारों पर आधारित दृष्टिकोण को अपना कर निर्णय लेने चाहिए।
- महिला अधिकार, बाल अधिकार, बुजुर्ग अधिकार, किन्नर अधिकार, वंचित वर्ग के अधिकार इत्यादि को ध्यान में रखकर अपनी भूमिका का संपादन करना चाहिए। प्लेटो का न्याय सिद्धांत इन्हीं अर्थों में भारतीय समाज व प्रशासन में प्रासंगिक माना जा सकता है।

2023

1. Discuss the role of administration in bringing about 'Social reform'.
'समाज-सुधार' की दिशा में प्रशासन की भूमिका की चर्चा कीजिए।

उत्तर- समाज सुधार की दिशा में प्रशासन की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि प्रशासन ही है जो नीतियों को लागू करता है और समाज में बदलाव लाने के लिए ठोस कदम उठाता है।

- प्रशासन का कार्य केवल कानून लागू करना नहीं होता, बल्कि शिक्षा, आर्थिक कल्याण, सामाजिक समानता और सतत जागरूकता के द्वारा समाज के हर वर्ग को सुधार की दिशा में अग्रसर करना होता है।
  एक जिम्मेदार प्रशासन समाज में समृद्धि, शांति, और समानता लाने के लिए आवश्यक है।
- 'समाज-सुधार' में प्रशासन की भूमिका-समाज-सुधार की दिशा में प्रशासन की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण और बहुआयामी है प्रशासन सबसे पहले समाज में व्याप्त, कुप्रथाओं, जैसे दहेज प्रथा, बाल-विवाह, जातिवाद, लिंगभेद और अशिक्षा को समाप्त कर हेतु कानून बनाता है और उनका प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करता है।
- **समाज-सुधार में प्रशासन के प्रमुख पहलू:**
  1. नीति निर्माण
  2. कानून और व्यवस्था का प्रवर्तन
  3. शिक्षा और जागरूकता
  4. आर्थिक और सामाजिक कल्याण
  5. सामाजिक समानता
  6. संवेदनशीलता और निरीक्षण
  7. सामाजिक संस्थाओं और संगठनों के साथ साझेदारी
  8. स्वच्छ भारत मिशन
  9. महिला सशक्तिकरण

2. State the features of Deontology and Consequentialism. Which one of the two approaches more suitable for an administrator? Why?
परिणाम निरपेक्षवाद एवं परिणाम सापेक्षवाद की विशेषताएँ बताइए। इन दोनों दृष्टिकोणों में से प्रशासक के लिए अधिक उपयुक्त कौनसा है? क्यों?

उत्तर- **परिणाम निरपेक्षवाद-** और परिणाम सापेक्षवाद दो महत्वपूर्ण नैतिक दृष्टिकोण हैं जो किसी कार्य के नैतिकता या सही/गलत का निर्धारण करने के तरीके में अंतर दर्शाते हैं।

- **परिणाम निरपेक्षवाद-** एक नैतिक दृष्टिकोण है, जो कर्त्तव्य, नियमों और सिद्धांतों के पालन को सर्वोपरि मानता है। इसके अनुसार किसी कार्य की नैतिकता उसके परिणामों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह देखा जाता है कि वह कार्य नैतिक सिद्धांतों और कर्त्तव्ये के अनुरूप है या नहीं।
- **परिणाम निरपेक्षवाद की विशेषताएँ:**

- कर्तव्य और सिद्धांत का पालन प्राथमिकता होती है, न कि कार्य के परिणाम।
- नैतिक नियम और प्रणालियाँ स्पष्ट होती हैं, जैसे "झूठ बोलना गलत है" या "हिंसा गलत है"।
- इसे नैतिक आदर्श माना जाता है, जो कि हर स्थिति में समान रूप से लागू होता है, बिना परिणामों को देखे।
- परिणाम निरपेक्षवादी विचारधारा के अनुसार, यदि कोई कार्य किसी नैतिक कर्तव्य का उल्लंघन करता है, तो उसका परिणाम चाहे जैसा भी हो, वह गलत माना जाएगा।
- **परिणाम सापेक्षवाद-** यह इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि किसी कार्य की नैतिकता उसके परिणामों पर निर्भर करती है। यदि कार्य से सकारात्मक परिणाम उत्पन्न होते हैं, तो वह नैतिक है।

- **परिणाम सापेक्षवाद की विशेषताएँ:**
  - कार्यों के परिणाम अधिक महत्व रखते हैं, और परिणामों के आधार पर किसी कार्य को सही या गलत माना जाता है।
  - यदि किसी कार्य से अधिक सुख और कल्याण उत्पन्न होता है, तो वह कार्य नैतिक माना जाता है।
  - परिणामों को मापने और समान्यतः अधिकतम सकारात्मक परिणाम लाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है।
  - इस दृष्टिकोण में नैतिक सिद्धांत और सामाजिक हितों को ध्यान में रखते हुए, सबसे अच्छे परिणाम प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।
- **प्रशासन में उपयुक्त दृष्टिकोण-**
  - प्रशासक के लिए परिणाम सापेक्षवाद अधिक उपयुक्त है, क्योंकि प्रशासन का कार्य समाज के कल्याण को बढ़ावा देना और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करना होता है। यह दृष्टिकोण प्रशासन को अधिक लचीलापन, नैतिकता और समाज के हित की दिशा में निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान करता है। हालांकि, परिणाम निरपेक्षवाद भी महत्वपूर्ण है, खासकर जब प्रशासन को नैतिक सिद्धांतों और नियमों का पालन करना हो, लेकिन व्यावहारिक रूप से परिणाम सापेक्षवाद समाज में सुधार और विकास के लिए अधिक उपयुक्त है।
- **परिणाम सापेक्षवाद की उपयुक्तता के कारण:**
  1. सामाजिक कल्याण
  2. लचीलापन और संतुलन:
  3. नैतिक परिणाम
  4. व्यवहारिक दृष्टिकोण

3. **What do you mean by moral dilemma? Should personal ethics take precedence over professional ethics in a situation of moral conflict?**
   नैतिक द्वन्द्व से आप क्या समझते हैं? क्या किसी नैतिक संघर्ष की स्थिति में वैयक्तिक नैतिकता को वृत्तिपरक नैतिकता पर वरीयता दी जानी चाहिए?

उत्तर- नैतिक द्वन्द्व एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति को दो या दो से अधिक नैतिक विकल्पों के बीच चयन करना होता है, और प्रत्येक विकल्प का पालन करने से कुछ नैतिक कर्तव्यों या सिद्धांतों का उल्लंघन होता है। इसमें व्यक्ति को यह तय करना होता है कि कौन सा विकल्प अधिक उचित और नैतिक रूप से सही होगा, लेकिन किसी एक विकल्प को चुनने पर दूसरे का उल्लंघन करना अनिवार्य होता है।

- ऐसे संघर्षों में यह सवाल उठता है कि वैयक्तिक नैतिकता को वरीयता दी जानी चाहिए या वृत्तिपरक नैतिकता को वैयक्तिक नैतिकता व्यक्ति के निजी मूल्यों और आदर्शों से जुड़ी होती है, जबकि वृत्तिपरक नैतिकता उस व्यक्ति के पेशे या संगठन द्वारा निर्धारित नियमों और जिम्मेदारियों पर आधारित होती है।
- किसी नैतिक संघर्ष में प्राथमिकता का निर्णय संदर्भ और परिस्थितियों पर निर्भर करता है।
- **वैयक्तिक नैतिकता और वृत्तिपरक नैतिकता के बीच वरीयता:** नैतिक संघर्ष की स्थिति में वैयक्तिक नैतिकता को वृत्तिपरक नैतिकता पर वरीयता दी जानी चाहिए या नहीं? यह सवाल एक कठिन नैतिक निर्णय का सामना करता है, क्योंकि इसमें दोनों पक्षों के अपने-अपने तर्क होते हैं।
- **वैयक्तिक नैतिकता को वरीयता देने के तर्क:**
  1. **स्वतंत्रता और आत्मसम्मान:** हर व्यक्ति का अपना आध्यात्मिक और नैतिक विकास होता है, और अगर वह अपने व्यक्तिगत नैतिक विश्वासों से समझौता करता है, तो उसे अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता की हानि हो सकती है। वैयक्तिक नैतिकता में किसी के अपने सिद्धांत, मान्यताएँ और नैतिकता शामिल होती है, जो उसे अपने स्वयं की पहचान और आत्मनिर्भरता के लिए जरूरी होती हैं।
  2. **वैयक्तिक नैतिकता और समाज का रिश्ता:** व्यक्तिगत नैतिकता व्यक्ति के वैयक्तिक विकास और समाज के व्यापक कल्याण के लिए आवश्यक है। यदि लोग अपने व्यक्तिगत नैतिक सिद्धांतों से समझौता करते हैं, तो यह समाज में नैतिक पतन और सामाजिक अनुशासन की कमी का कारण बन सकता है। इसलिए, वैयक्तिक नैतिकता की रक्षा करना समाज के लिए भी महत्वपूर्ण होता है।
- **वृत्तिपरक नैतिकता को वरीयता देने के तर्क:**
  1. **सामाजिक जिम्मेदारी और कर्तव्य:** वृत्तिपरक नैतिकता एक व्यवसायिक भूमिका से जुड़ी होती है, और इसमें समाज के लिए योगदान और संगठन के हितों को प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई डॉक्टर अपने पेशे के प्रति पेशेवर कर्तव्यों का पालन करता है, तो उसे व्यक्तिगत विचारों से अधिक सामाजिक जिम्मेदारी का पालन करना पड़ता है।
  2. **वृत्तिपरक नैतिकता का व्यापक प्रभाव:** जब एक व्यक्ति अपने पेशेवर कर्तव्यों को प्राथमिकता देता है, तो इसका प्रभाव न केवल संस्था पर पड़ता है, बल्कि इससे समाज में सकारात्मक बदलाव भी आ सकता है। उदाहरण के लिए, एक सरकारी अधिकारी या न्यायाधीश को वृत्तिपरक नैतिकता के अनुसार कार्य करना चाहिए, ताकि निर्णय निष्पक्ष और न्यायपूर्ण हो, न कि व्यक्तिगत मान्यताओं के आधार पर।
  3. **व्यवसायिक दुनिया की आवश्यकताएँ:** कुछ मामलों में पेशेवर नैतिकता को स्वीकारना जरूरी होता है, जैसे कि कारोबार या कानूनी क्षेत्र में। यहां, नैतिकता को एक संरचित और व्यवस्थित तरीके से लागू किया जाता है, जिससे पेशेवर निर्णय प्रभावी और संगठनात्मक हितों के अनुरूप होते हैं।
- वैयक्तिक नैतिकता और वृत्तिपरक नैतिकता दोनों ही महत्वपूर्ण हैं, लेकिन एक नैतिक द्वन्द्व की स्थिति में, आमतौर पर वैयक्तिक नैतिकता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। इसका कारण यह है कि व्यक्तिगत नैतिक विश्वासों का पालन करना व्यक्ति की आत्मसम्मान, मानवता और नैतिकता के लिए आवश्यक होता है। हालांकि, यह इस बात पर निर्भर करता है कि स्थिति के अनुसार कौन सा निर्णय समाज के हित में अधिक कारगर होगा। एक संतुलन बनाना महत्वपूर्ण होता है, जिसमें व्यक्ति को अपने नैतिक विश्वासों और पेशेवर कर्तव्यों दोनों के बीच सही निर्णय लेने की कोशिश करनी चाहिए।

2024

1. **'शुभ' का अर्थ क्या है? आपका शुभ-विषयक विचार एक उत्तम प्रशासन की संरचना में किस प्रकार सहायक होगा?**

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119

उत्तर-

- वह नैतिक सम्प्रत्य जो व्यक्ति की इच्छा/प्रयोजन की प्राप्ति में सहायक होता है शुभ कहलाता है।
- वह कार्य, निर्णय या उद्देश्य जो मानव जीवन, समाज और राष्ट्र कल्याण में सहायक हो।

  नैतिक दृष्टि से इसे दो भागों में बाँटा गया है:
  1. सापेक्ष शुभ: साधन स्वरूप—जैसे धन, शक्ति, ज्ञान।
  2. परम शुभ: साध्य स्वरूप —जैसे न्याय, सत्य, दया, करुणा, समानता, मानव-कल्याण।
- 'शुभ' वह है जो समष्टि हित, नैतिक मूल्यों और मानवता के अनुरूप हो।

शुभ-विषयक विचार	**सहायक**	**उदाहरण**
1. सार्वजनिक हित प्राथमिकता	निर्णय केवल व्यक्तिगत या राजनीतिक स्वार्थ पर आधारित नहीं, बल्कि समाज के अधिकतम लाभ पर आधारित हों।	PMGKAY: 80 करोड़ लाभार्थियों के लिए खाद्य सुरक्षा।
2. मूल्य-आधारित शासन	सत्य, न्याय, ईमानदारी और जवाबदेही प्रशासन में सुदृढ़ हों।	आयुष्मान भारत: गरीबों के लिए पारदर्शी स्वास्थ्य सेवा।
3. संवेदनशील और मानवीय प्रशासन	कमजोर वर्गों, वंचितों और दिव्यांगों की विशेष जरूरतों का ध्यान।	अन्नपूर्णा रसोई, चरण पादुका अभियान, रास्ता खोलो अभियान।
4. दीर्घकालीन विश्वास निर्माण	नागरिकों का शासन पर भरोसा बढ़ता है और सामाजिक सहयोग सुदृढ़ होता है।	नई शिक्षा नीति 2020: शिक्षा में समान अवसर।
5. निर्णयों में नैतिकता और निष्पक्षता	नियमों का सही पालन, पक्षपात और भ्रष्टाचार से बचाव।	मनरेगा : रोजगार सुरक्षा में पारदर्शिता।
6. स्थिर और न्यायसंगत समाज	'शुभ' प्रशासन सामाजिक असमानताओं को कम करता है।	भूदान आंदोलन: भूमिहीनों को जमीन देकर समानता।
7. नेतृत्व और प्रेरणा	नैतिक प्रशासन अगली पीढ़ी को प्रेरित करता है।	महात्मा गांधी के आदर्श → ग्राम स्वराज और स्वावलंबन।
8. सामुदायिक कल्याण को बढ़ावा	प्रशासन न केवल सेवा, बल्कि समुदाय को सशक्त बनाने में सहायक।	नेकी की दीवार: जरूरतमंदों के लिए वस्तुओं का वितरण।

2. प्रशासन के लिए प्रेरणा के रूप में उपयोगितावाद, सर्वोदय तथा लोक-संग्रह का तुलनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर-

सिद्धांत	**मूल विचार/ भावना व उदाहरण**	**प्रशासन में उपयोगिता**	**मूल्यांकन**
उपयोगितावाद	अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख उदाहरण: मनरेगा, अंत्योदय अन्न योजना(NFSA)	नीति-निर्माण में बहुसंख्यक हित, लागत-लाभ विश्लेषण, तर्कसंगत फैसले	बहुसंख्यक-प्रधान, अल्पसंख्यकों के हित उपेक्षित हो सकते हैं।
सर्वोदय	सभी का उत्थान उदाहरण: भूदान आंदोलन	समावेशी, शोषित और वंचित वर्गों को प्राथमिकता, गांधीवादी प्रेरणा	समाज में संतुलन, नैतिकता और सेवा का भाव, न्यूनतम नुकसान
लोक-संग्रह	सार्वजनिक कल्याण, सबका कल्याण) उदाहरण: नेकी की दीवार, नारायण सेवा संस्थान	लोक हित, सामाजिक अनुकूलता, जन-आकांक्षाओं का सम्मान	सामूहिकता, लोकमत का सम्मान, व्यवस्था में लोक-समावेश

3. 'मानव संसाधन' का विचार, 'मानवता एक साध्य' के विचार से किस प्रकार सुसंगत है? लोक-कल्याणकारी राज्य के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण कीजिए।

उत्तर-

- 'मानव संसाधन' का विचार पारंपरिक रूप से लोगों को उत्पादन के साधन के रूप में देखता है। हालांकि, 'मानवता एक साध्य' का विचार व्यक्ति को उसके अपने अधिकार में एक अंतिम लक्ष्य मानता है। यह सुसंगत तब बनता है जब मानव संसाधन विकास के माध्यम से व्यक्ति की गरिमा, कौशल और क्षमता का सम्मान किया जाता है।
- 'मानव संसाधन' का विचार और 'मानवता एक साध्य' की अवधारणा मूलतः मनुष्य-केन्द्रित दृष्टिकोण पर आधारित हैं, इसलिए ये दोनों परस्पर सुसंगत हैं।
- 'मानव संसाधन' के अंतर्गत मनुष्य को केवल उत्पादन का साधन नहीं माना जाता, बल्कि उसकी क्षमताओं, कौशल, स्वास्थ्य और शिक्षा के विकास को प्राथमिकता दी जाती है।
- यह मनुष्य की गरिमा, स्वतंत्रता और संभावनाओं को उभारने की प्रक्रिया है, जो सीधे-सीधे इस विचार को मजबूत करती है कि मनुष्य स्वयं में एक मूल्यवान लक्ष्य हैन कि केवल किसी आर्थिक या राज्य-प्रक्रिया के लिए साधन।
- लोक-कल्याणकारी राज्य के संदर्भ में यह एक महत्त्वपूर्ण समन्वय प्रस्तुत करता है, क्योंकि ऐसा राज्य नागरिकों के समग्र कल्याण, समान अवसर, सामाजिक सुरक्षा और मानवीय गरिमा के संवर्धन को अपना मुख्य उद्देश्य मानता है।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, रोजगार, सामाजिक न्याय और सुरक्षा जैसी नीतियाँ मनुष्य की क्षमता-वृद्धि के माध्यम से उसे बेहतर जीवन प्रदान करती हैं।
- इस प्रकार राज्य मानव संसाधन विकास द्वारा मनुष्य की उपयोगिता बढ़ाने के साथ-साथ उसके स्वाभाविक मूल्य, अधिकारों और गरिमा की भी रक्षा करता है।
- परिणामस्वरूप, 'मानव संसाधन' और 'मानवता एक साध्य' की अवधारणाएँ लोक-कल्याणकारी राज्य में एक-दूसरे को पूरक बनाती हैं, जहाँ मानव विकास ही अंतिम लक्ष्य और साध्य दोनों माना जाता है।

❑❑❑

UTKARSH CLASSES | support@utkarsh.com | : 91166 91119